डा० अनिता ओझा

एसोसिएट प्रोफेसर

विषय - संस्कृत

कक्षा - बी० ए० तृतीय वर्ष

प्रश्नपत्र - प्रथम

प्रश्नपत्र का शीर्षक - काव्य

महाकवि माघ कृत शिशुपालवधम् का प्रथम सर्ग

महाकवि माघ का जीवन परिचय

संस्कृत भाषा के श्रेष्ठ कवियों में 'माघ' की गणना की जाती है। उनका समय लगभग 675 ई. के लगभग निर्धारित किया गया है। उनकी सुप्रसिद्ध रचना शिशुपालवध नामक महाकाव्य है। इसकी कथा महाभारत से ली गयी है। इस ग्रन्थ में युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ के अवसर पर चेदि नरेश शिशुपाल की कृष्ण द्वारा वध करने की कथा का काव्यात्मक चित्रण किया गया है।

महाकवि माघ वैष्णव मतानुयायी थे। इनकी इच्छा अपने वैष्णव काव्य के माध्यम से शैव मतावलम्बी भारवि से आगे बढ़ जाने की थी। इसके निमित्त इन्होंने काफी प्रयत्न भी किये। उन्होंने अपने ग्रन्थ की रचना किरातार्जुनीयम् की पद्धति पर की। 'किरात' की भांति शिशुपालवध का आरम्भ भी 'श्री' शब्द से होता है। माघ मारवाड़ के प्राचीनतम महाकाव्य 'शिशुपालवध' के रचयिता थे। 'माघ' का जन्म एक प्रतिष्ठित धनी श्रीमाली ब्राह्मण-कुल में हुआ था। वे सर्वश्रेष्ठ संस्कृत महाकवियों की त्रयी माघ, भारवि, कालिदास में अन्यतम हैं। उन्होंने शिशुपालवध नामक केवल एक ही महाकाव्य लिखा। इस महाकाव्य को महाकवि माघ ने अपनी काव्य-प्रतिभा के बल-पर 20 सर्ग के 1650 श्लोकों में विभक्त किया।

"माघे सन्ति त्रयो गुणाः" उनके बारे में प्रसिद्ध है। माघ को संस्कृत आलोचकों व विद्वानों द्वारा प्रायः एक प्रकाण्ड सर्वशास्त्रतत्त्वज्ञ विद्वान माना जाता है। दर्शनशास्त्र, संगीतशास्त्र तथा व्याकरणशास्त्र में उनकी विद्वत्ता थी। उनका पाण्डित्य एकांगी नहीं, प्रत्युत सर्वगामी था। अतएव उन्हें पण्डित-कवि भी कहा गया है। उनके बारे में पं. बलदेव उपाध्याय ने कहा है—

अलंकृत महाकाव्य की यह आदर्श कल्पना

महाकवि माघ का संस्कृत साहित्य को अविस्मरणीय योगदान है। जिसका अनुसरण तथा परिवृहण कर हमारा काव्य साहित्य समृद्ध, सम्पन्न तथा सुसंस्कृत हुआ है। भारतीय आलोचक माघ में कालिदास जैसी उपमा, भारवि जैसा अर्थगौरव तथा दण्डी जैसा पदलालित्य इन तीनों गुणों को देखते हैं। माघ की प्रशंसा में कहा गया है —

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥"

माघ की भाषा की अपार समृद्धि को लेकर यह उक्ति प्रसिद्ध है —

'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।'

अर्थात् माघ के काव्य के पहले नौ सर्गों का ही अध्ययन कर लिया जाए, तो संस्कृत भाषा में कोई भी शब्द अध्येता के लिए नया नहीं रह जाता। नये शब्दों या नये मुहावरों को रचने में माघ पटु हैं। एक समीक्षक ने उन्हें अलंकृत शब्दों का उद्भावक कहा है।

सहजता के साथ सूक्ष्म पर्यवेक्षण तथा वस्तुजगत् का गहरा ज्ञान माघ के वर्णनों की विशेषता है। आकाश से उतरते नारद के वर्णन में वे कहते हैं —

चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा
ततः शरीरीति विभाविताकृतिम्।
विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति
क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः॥ (1/3)

(दूर से देखने पर श्रीकृष्ण को लगा कि कोई ज्योति का पुंज आकाश से उतर रहा है। नारद कुछ और नीचे आये, तो लगा कोई शरीरधारी है और भी नीचे आने पर पता चला कि कोई मनुष्य है, जिसके हाथ-पाँव आदि अंग अलग-अलग पहचाने जा सकते हैं तथा नारद जब धरती के एकदम निकट आ गये, तो श्रीकृष्ण ने पहचाना कि ये तो नारद हैं।)

माघ के वर्णनों की विशेषता उनका समाज के प्रति गहन अनुशीलन और पर्यवेक्षण है। अपने युग के विद्या, ज्ञानविज्ञान और शिल्पकला के विविध अनुशासनों में कोई भी ऐसा नहीं था जिसकी प्रामाणिक जानकारी उन्हें न हो। वेद, छहों वेदांग, पुराण-इतिहास, दर्शन, राजनीति, कर्मकांड, आयुर्वेद, धनुर्वेद, संगीत, पाककला आदि पर उन्होंने अच्छा अधिकार अपने महाकाव्य में अनेकत्र प्रदर्शित किया है।

माघ का कृतित्व

महाकवि माघ की एकमात्र कृति शिशुपालवध ही उपलब्ध है। कथा की दृष्टि से माघ के महाकाव्य का मूल स्रोत महाभारत का सभापर्व है। श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध में श्री युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल-वध की कथा महाभारत के अनुसार मिलती है। शिशुपालवध में नायक श्रीकृष्ण विष्णु के अवतार तथा समग्र विभूतियों से युक्त हैं। पर वे आदर्श मानव के रूप में भी अपने श्रेष्ठ गुणों का प्रदर्शन करते हैं।

शिशुपालवध का अंगीरस वीर है। माघ ने अपने आराध्य तथा महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण को शौर्य, धैर्य, गांभीर्य के प्रतिमान के रूप में प्रस्तुत किया है।

महाकवि माघ कृत शिशुपालवध के प्रथम सर्ग में कुल 75 श्लोक हैं। 73 श्लोक वंशस्थ छन्द में हैं तथा 74वें में प्रमिताक्षरा छन्द व 75वें में शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

प्रथम सर्ग की संक्षिप्त कथा यह है कि आकाश मार्ग से देवर्षि नारद द्वारिका में श्रीकृष्ण के पास आते हैं उनके पृथ्वी पर पैर रखने के पूर्व ही उठकर श्रीकृष्ण नारद जी का स्वागत कर उचित आसन

पर बैठकर अर्घ्यादि प्रदान करते हैं। श्रीकृष्ण के द्वारा आने का कारण पूछे जाने पर नारद शिशुपाल की उद्दण्डता का वर्णन कर इन्हीं का सन्देश सुनाते हैं। उसे स्वीकार कर लेने के अनन्तर नारद आकाश मार्ग से पुनः लौट जाते हैं।

शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग)

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्,
जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि।
वसन्ददर्शावतरन्तमम्बरात्,
हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः॥1॥

अन्वय - श्रियः पतिः जगन्निवासः जगत् शासितुं श्रीमति वसुदेवसद्मनि वसन् हरिः अम्बरात् हिरण्यगर्भाङ्गभुवम् मुनिम् ददर्श॥1॥

हिन्दी अनुवाद -
लक्ष्मी (रुक्मिणी) के पति, सम्पूर्ण जगत् के निवास (आधार) भूत भगवान् विष्णु (श्रीकृष्ण) जगत् का नियन्त्रण करने के लिए वसुदेव के घर निवास कर रहे थे कि (एक बार) उन्होंने आकाश से उतरते हुए ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि को देखा।

गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः
प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।
पतत्यधोधाम विसारि सर्वतः
किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः॥2॥

अन्वय - अनूरुसारथेः गतम् तिरश्चीनम् हविर्भुजः ऊर्ध्वज्वलनम् प्रसिद्धम्, सर्वतः विसारि धाम अधः पतति, किम् एतद् इति जनैः आकुलम् ईक्षितम्॥2॥

हिन्दी अनुवाद -

सूर्य की गति तिरछी होती है और अग्नि का ऊपर की ओर प्रज्वलित होना (यह) प्रसिद्ध है। (इन दोनों की अपेक्षा विलक्षण) सभी ओर (मण्डल के आकार में) फैलने वाला यह तेज नीचे की ओर आ रहा है। यह क्या है? इसप्रकार आकुल लोगों के द्वारा देखे गये- 1

चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा
ततः शरीरीति विभाविताकृतिम् ।
विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति
क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः ॥3॥

अन्वय- विभुः सः पुरा त्विषाम् चयः इति अवधारितम्
ततः विभावितकृतिम् शरीर इति (अवधारितम्)
विभक्तावयवम् पुमान् इति (अवधारितम्) अमुं
क्रमात् नारद इति अबोधि ॥3॥

हिन्दी - अनुवाद -

सर्वव्यापक श्रीकृष्ण ने सर्वप्रथम तेज पुञ्ज के रूप में, उसके बाद लगा कोई शरीर-धारी है, और भी नीचे आने पर अवयवों के अलग-अलग दिखाई देने पर देहधारी (मनुष्य) है तथा नारद जब धरती के एकदम निकट आ गये, तो श्रीकृष्ण ने पहचाना कि ये तो नारद हैं।